Structure - Functional approach

तुलनात्मक शासन और राजनीति के अध्ययन में संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आमंड एवं कोलमैन ने "संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम" का प्रतिपादन विकासशील देशों की राजनीतिक-व्यवस्था की तुलनात्मक व्याख्या के लिए किया है। जिससे की उनकी राजनीतिक व्यवस्था की सही व्याख्या प्रस्तुत की जा सके। उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक "Politics of Developing Areas" में संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम का विवेचन किया है जो कि तुलनात्मक राजनीति के लिए काफी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। आमंड ने राजनीतिक व्यवस्था को समझने के लिए सात प्रकार्य का वर्णन किया है और उसी आधार पर संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम का विश्लेषण किया है।

"संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम" डेविड ईस्टन के "व्यवस्था विश्लेषण" के असंतोष के कारण आया जिसके प्रतिपादक आमंड एवं कोलमैन हैं उन्होंने अपनी पुस्तक में इसका वर्णन करते हुए बतलाया है कि प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में निवेश तथा निर्गत कार्य होते हैं उन्हें उन्होंने कृत्य कहा है उन्होंने कृत्य का ही विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए उसके सम्पादित करनेवाली संरचना का भी विस्तृत रूप से वर्णन किया है इसी आधार पर इसने संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

आमंड ने पहले व्यवस्था की व्याख्या की है उनका मानना है कि "एक सीमित क्षेत्र में समाज तथा व्यक्ति के अंतःक्रिया होती है इसी के सेट को उसने व्यवस्था कहा है। उसके बाद उसने राजनीतिक व्यवस्था का विवेचन किया है तथा वेबर के इस राजनीतिक व्यवस्था में कुछ परिवर्तन करते हुए उसका समर्थन किया है। वेबर का मानना था कि "राजनी-भू भाग में औचित्यपूर्ण सत्ता का संचालन करना ही राजनीतिक व्यवस्था है" जिसे आमंड ने "एक" भू-भाग को हटा दिया।

उनका मानना था कि प्रत्येक राजनीतिक पद्धति में एक व्यवस्था होती है जो कुछ कार्य का निष्पादन भी करती तथा कुछ योजनाओं में मान्य पाए जाते हैं लेकिन उनमें कुछ असमानताएं भी पाई जाती हैं जिनके वे संस्थाओं, नेताओं का मान्य मानते हैं लेकिन सभी में समानता इस बात की है कि वे अपने कार्य का निष्पादन करते हैं।

आमंड के अनुसार राजनीतिक पद्धति में राजनीतिक व्यवस्था के द्वारा सात प्रकार्य किए जाते हैं। उनके बाद उनके इसे दो वर्ग प्रकार्य में बांटा है जो निम्न है —

(1) निवेश प्रकार्य :- (i) राजनीतिक समाजीकरण और भर्ती
(ii) हित स्पष्टीकरण
(iii) हित समूहीकरण
(iv) राजनीतिक संप्रेषण

(2) निर्गत प्रकार्य :- (i) नियम निर्माण
(ii) नियम अर्प
(iii) नियम अधिनिर्णय

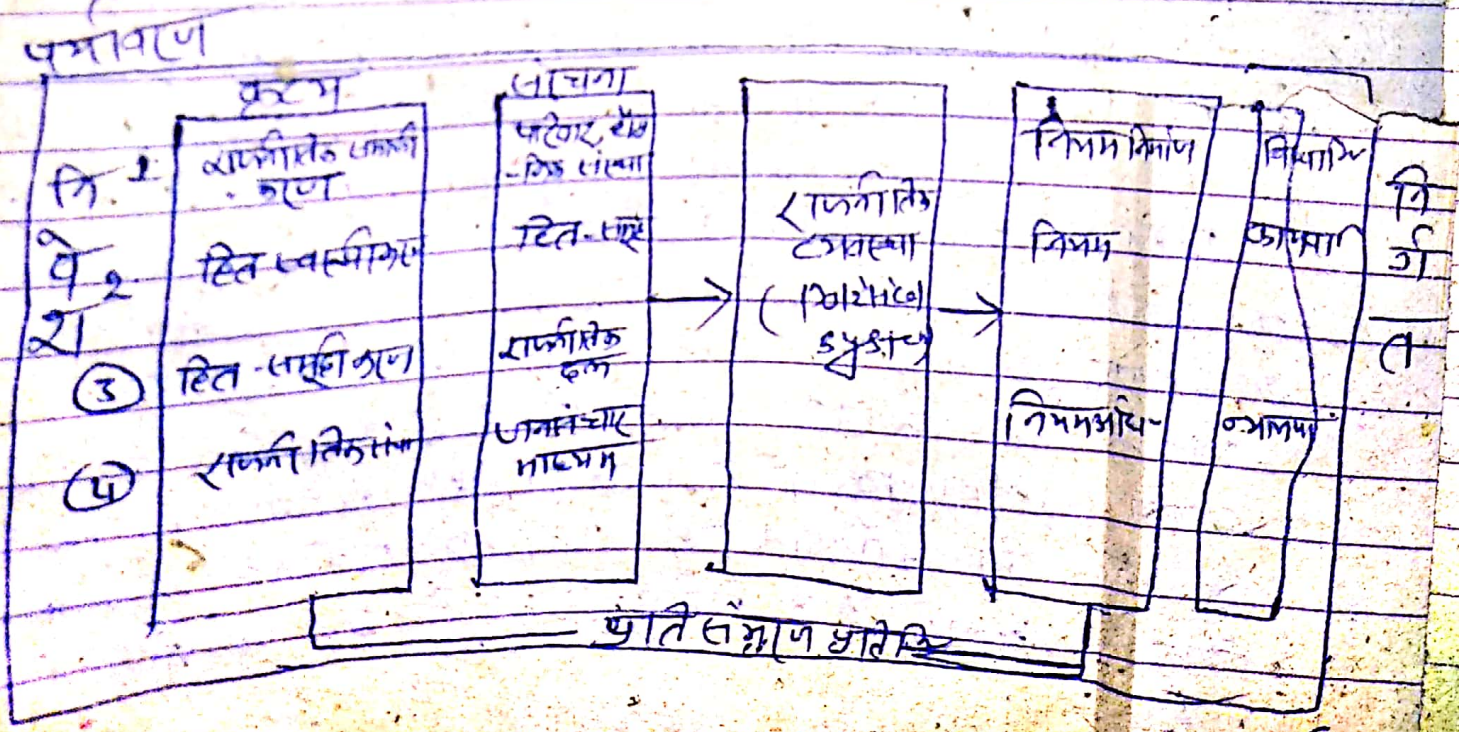

(1) निवेश प्रकार्य :-

आमंड ने निवेश प्रकार्य पर ही ज्यादा बल दिया है क्योंकि विकासशील देशों में इसपर ही ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इसके अंतर्गत ही सदैव माँग तथा समर्थन रखते हैं जिसके आधार पर निर्गत में वे अपने हितों की पूर्ति करना चाहते हैं। इसके अन्तर्गत निम्न प्रकार्य होते हैं

(1) राजनीतिक समाजीकरण एवं भर्ती :-

राजनीतिक समाजीकरण एवं भर्ती इसके प्रथम प्रकार्य है यह सीखने की एक सतत प्रक्रिया है, जो हमें राजनीतिक संस्कृति के मूल्यों, विश्वासों तथा मान्यताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करते हैं। यह आधुनिक प्रभाव के लिए आवश्यक है, जिससे व्यक्ति ख्याल का विकास होता है। राजनीतिक समाजीकरण एक जीवन भर चलने की प्रक्रिया है जिसे नियोजित तथा अनियोजित दोनों रूप में हमें बतलाया जाता है। नियोजित रूप में हमें स्कूल, चर्च तथा अन्य संस्थाओं द्वारा यह ज्ञान दिया जाता है जैसे - स्पार्टा के शिक्षा पद्धति, प्राचीन भारतीय गुरुकुल की, सोवियत संघ तथा चीन की शिक्षा पद्धति नियंत्रण पद्धति है। जबकि अनियोजित रूप से यह हमें परिवार, साथी समूह तथा नैतिक आचरण के रूप में सिखाया जाता है जो किसी भी व्यवस्था के प्रति लोगों की धारणा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह कई रूपों में हो सकता है। यह उद्देश्यात्मक तथा भावनात्मक दोनों रूपों में हो सकती है। उद्देश्यात्मक रूप में यह कानून तथा समानता पर आधारित होता है जबकि भावात्मक रूप से यह धर्म आदि पर आधारित होता है।

(2) हित स्पष्टीकरण -

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण के अंतर्गत द्वितीय प्रकार्य हित-स्पष्टीकरण का है जिसमें राजनीतिक व्यवस्था की नीतियों का निर्धारण किया जाता है जिसमें सदस्यों की माँग, हित की मांगों को एक स्वरूप देने की कोशिश की जाती है जिससे यह स्पष्ट तथा क्रमोन्नयन लायक रह सके। इसे विभिन्न तथा विभिन्न श्रेणियों द्वारा सम्पादित किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(iii) हित-समूहीकरण :

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण का तृतीय प्रकार्य है हित-समूहीकरण है जिसमें लोगों की मांगों का स्पष्टीकरण होने के बाद समूहीकरण किया जाता है जिससे कि यह शासकों को अपनी ओर आकर्षित कर सकें तथा अपना प्रभाव बना सकें।

यह निर्गत प्रकार्य में भी सहायता प्रदान करता है इसी से सरकार द्वारा जितने भी निर्णय लिए जाते हैं उसमें यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके सम्पादन का मुख्य कार्य राजनीतिक दल करता है जो इसे करने में मदद करता है।

(iv) राजनीतिक संचार :-

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण में राजनीतिक संचार सबसे महत्वपूर्ण प्रकार्य है जिस पर पूरा राजनीतिक व्यवस्था आधारित होता है। यह जनता की मांगों तथा मान्यताओं को सरकार तक पहुंचाने का कार्य करती है तथा सरकार द्वारा इसके बारे में लिए गए निर्णय को जनसाधारण तक पहुंचाने का कार्य करता है अर्थात् यह सरकार तथा जनता के बीच सम्पर्क का कार्य करता है। यह प्रकार्य के अन्तर्गत निवेश तथा निर्गत के बीच पुल का कार्य करता है। राजनीतिक संचार जनसंचार माध्यम द्वारा किया जाता है तथा काफी व्यापक होता है।

(2) निर्गत प्रकार्य :-

निर्गत प्रकार्य, निवेश प्रकार्य के फलस्वरूप राजनीतिक व्यवस्था के अस्तित्व की रक्षा के लिए की जाती है। ~~यह~~ इसके अन्तर्गत है नियम-निर्माण, नियम को प्रयुक्ति तथा नियम-अधिनिर्णय होता है। इसे निम्न रूप में देख सकते हैं।

(v) नियम-निर्माण :- नियम-निर्माण संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण के निर्गत-प्रकार्य का प्रथम चरण है जिसमें प्रकार निवेश प्रकार्य की आधार पर नियम निर्माण होती है और प्रजातंत्र में जनमतता तथा स्वतंत्रता पर आधारित होता है जबकि पहले यह राजाओं तथा बुर्जुआ वर्ग के द्वारा किया जाता था लेकिन अब यह कार्यपालिका की विधायिका द्वारा किया जाता है।

(vi) नियम-प्रयुक्ति -

नियम-निर्माण के बाद राजनीतिक व्यवस्था में नियम-प्रयुक्ति की जाती है, जिसे कार्यपालिका करती है यह सभी के लिए होता है तथा सभी में सामंजस्य स्थापित करता है। राज्य के लोककल्याणकारी स्वरूप तथा कार्य जटिलता के कारण यह अब नौकरशाही के अधीन होता है।

(vii) नियम-अधिनिर्णय

नियम प्रयुक्ति के विपरीत अधिनिर्णय होता है जो राज्य के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण होता है राजनीतिक व्यवस्था में यह व्यक्तिगत क्षेत्र के लिए होता है जिसका स्वतंत्र तथा निष्पक्ष रूप से कार्यान्वयन होना चाहिए। यह कार्य न्यायपालिका करती है।

इस प्रकार आमंड ने अपने संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम का विश्लेषण किया है तथा प्रत्येक कार्य के लिए विशिष्ट संरचना का वर्णन किया है।

⇒ आलोचना :- संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण भी आलोचना से परे नहीं है। यद्यपि निम्न आलोचना की जाती है

(i) यह यथास्थितिवादिता का समर्थक है।

(ii) यह सामाजिक-परिवर्तन पर बल नहीं देता है।

Scanned with CamScanner

~~आलोचना~~ : निष्कर्ष :- आमंड का संरचनात्मक-
प्रकार्यात्मक उपागम राजनीति तथा तुलनात्मक
राजनीति के लिए काफी महत्वपूर्ण उपागम है
जिसने राजनीतिक व्यवस्थाओं की ओर हमारा
ध्यान आकर्षित किया तथा समाज को स्थायी
न मानकर एक परिवर्तनशील तथा विकास
का अंग माना है